

বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয়



স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়



চতুর্থ সেমিস্টারের অন্তর্গত এস. ই. সি. টু . কোর্সের
জন্য উপস্থাপিত

পত্রের শিরোনাম
আধুনিক যুগে বীরাজনা কাব্যের নারী চরিত্র

শিক্ষার্থীর নাম :- নীলিমা খাটুয়া
সেমিস্টার - চতুর্থ
পত্র - এস. ই. সি. টু .

রেজিস্ট্রেশন :- VU১১১০৪০২২২, ১০২১-১০২২

রোল নং :- ১১১৪১৫২- ১১০০১১

শিক্ষাবর্ষ :- ১০২২ - ১০২৩



SWARNAMOYEE JOGENDRANATH MAHAVIDYALAYA

Govt. Aided General Degree College | Estd.: 2014
At+P.O.: Amdabad, P.S.: Nandigram, Dist.: PurbaMedinipur, PIN 721650
www.sjmahavidyalaya.in Email: sjmahavidyalaya@gmail.com

CERTIFICATE

This is to certify that Nilima Khatua, Roll: 1114152, No: 210012,
Reg.No: VU211040222 of 2021 - 2022, a student of B.A. 4th Semester (Honours),
Bengali Department, Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya for the session 2022-2023; submitted
his/her project report for partial fulfillment of the syllabus of SEC-2,(CBCS) prescribed by Vidyasagar
University. The project has been prepared under the supervision of Dr. Madhumita Basu and Surajit
Mandal and ready to place before examiner for evaluation.

Supervisors

Dr. Ratan Kumar Samanta
Principal

S.J Mahavidyalaya
Principal

Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya
Amdabad :: Purba Medinipur :: Pin-721650

Dr. Madhumita Basu

Assistant Professor & HOD
Department of Bengali.

S.J Mahavidyalaya
Hod of the Department,

Department of Bengali
Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya
Amdabad, P.S.: Nandigram, Dist.: Purba Medinipur, Pin-721650

Surajit Mandal
SACT-I, Department of
Bengali
S.J Mahavidyalaya
Mahavidyalaya

Department of Bengali
S.J. Mahavidyalaya

ঃ প্রথম অঙ্গঃ

প্রকল্প বিষয়ক সর্বিণুণ আলোচনা

১. প্রকল্প কাকে বলে?

⇒ গোলো বিজ্ঞাস উচ্চদৃষ্টি প্রসারিকালীন প্রকল্পের মাঝিমে যে কা
মন্ত্রান্তর করা হয় তাকে প্রকল্প বলে,

২. প্রকল্পের বৈশিষ্ট্য হলি কী কী?

⇒ প্রকল্পের বৈশিষ্ট্য শুলি হল—

৩. সমস্যা ক্ষেত্রিকঃ— প্রকল্প ইল সমস্যা ক্ষেত্রে অবৈধ কোনো না গোলো
সমস্যাকে কেন্দ্র করে প্রকল্পের কাছ মন্ত্রান্তর হওয়ে
গাকে,

৪. উচ্চদৃষ্টি ক্ষেত্রিকঃ— গোলো বিজ্ঞাস উচ্চদৃষ্টি করে বা কেন
করে প্রকল্পের কাছ মন্ত্রান্তর হওয়ে থাকে,

৫. মৃত্যুবীণাগতঃ— প্রকল্পের কাছের মর্যাদিত্ব নিষ্কাশনীর
মৃত্যুবীণাগত প্রকল্প ঘটে।

৬. অভিনবত্বঃ— প্রকল্প মূলক কাছ মন্ত্রান্তর করতে নিয়ে
নিষ্কাশনীর কাছের মর্যাদি অভিনবত্ব দেখা যায়,

৭. অনুমতিবাদী মূলক ক্ষেত্রঃ— প্রকল্প করতে নিয়ে নিষ্কাশনীর
নানা বৃক্ষের অনুমতিবাদী মূলক কাছের মর্যাদি নিয়ে দেখে,

৮. বাস্তুব ক্ষেত্রিকতা— প্রকল্প নিষ্কাশক কাছ মন্ত্রা কোনো না কোলো
বাস্তুব সমস্যাকে কেন্দ্র করে হওয়ে থাকে,

৯. প্রকল্প মূলক কাছের মর্যাদিত্ব নিষ্কাশনীর নিয়ে দেখে মর্যাদি
নিয়া, অনুমতিবাদী, সময়ের, একে উপরের প্রতি নিয়ে মীলতা দ্রুতান্ত

Q) প্রকল্প কত প্রকার হয় এবং কীভু ?

⇒ সার্বিনির্মাণ ও প্রকার হয় - ① একক প্রকল্প,

② দ্রুণির্মাণ প্রকল্প,

Q) প্রকল্প কাছের জনস্বাস্থি কীভু ?

কীভু প্রকল্প কাছের জনস্বাস্থি কীভু ?

- ① প্রাতিটি সিকার্মিটে উপায়নীলিক কাছে মাঝে দুর্ক করা, সিকার্মিটে সুষ্ঠু-
নারোবি করা এবং তাছের দ্রুণি করা,
- ② দ্রু অঙ্গীছের মধ্যে মহামেটিজ নোবি অঙ্গিষ্ঠে রেখা,
- ③ দ্রু অঙ্গীছের শাতে কালমে তাই কর্বুতে মেঝেগো,
- ④ দ্রু অঙ্গীছের মৃত্যুন্ধীলিত কাছের প্রজ্ঞাতে মহামাণ করা,

Q) প্রকল্প মূলক কাছের উপকারিতা কী ?

- ① প্রকল্প জপানে মুরুন্তৈ সিকার্মিটে প্রাক্রিয়া ক্ষমতা সুষ্ঠু পায়,
- ② সিকার্মিটের মধ্যে দ্রুণি তাবে কাটকুরার মানবিকতা সুষ্ঠু পায়,
- ③ প্রকল্প জপানে কর্বুতে নিম্নে সিকার্মিটের পঁচা বই বাহুতে নিম্নে নিম্নে
স্থান অর্জনে সুযোগ পাওয়া যায়,

Q) প্রকল্পের গুরুত্ব ও প্রযোগিতা কী ?

⇒ কর্মাণে প্রজ্ঞানীগুণজীবনের আর্দ্ধান্ত বিষ্ণের প্রাতিটি দেশের আপনান্তর
জন্মনের অভিজ্ঞতা অন্ত প্রকল্পের গুরুত্ব ও প্রযোগিতায় অন্তর্ভুক্ত
প্রাতিটি দেশে প্রয়োগ আপনান্তরের জন্মনের অন্ত মানবিক অভিজ্ঞতা
নিকে বিষ্ণে নিষ্ঠ, তাই অন্ত নিম্নের উপরে উপরে উপরে উপরে
মানবিক জন্মনের অন্ত বিষ্ণে বিষ্ণের প্রকল্প গুরুত্ব করা হয়ে থা
কেবল মাত্র প্রকল্প মহামাণ অভিজ্ঞতা নিম্নে নিম্নে নিম্নে
করা হয় মাত্র অভিজ্ঞতা উপরে উপরে উপরে উপরে অন্ত হত আছে,

—ଶ୍ରୀମତୀ ମୁଖେୟ ବୀରଙ୍ଗଳା କାନ୍ତେର ନାରୀ ଚାଲି

ଏ ମାହକେଳ ମୁଖେୟ ଦୂରେ କୁଳ ଚାଲି :— ୧୮-୨୪ ମାର୍ଚ୍ଚର ୨୦ ଶୁଭ୍ୟାର
ଦେଲାଉ —ମାର୍କିନ୍‌ହାଉଡ଼ି ପ୍ରାଚୀର ଏକ ମଧ୍ୟାନ୍ତ ଲ୍ଲିନ୍ କାନ୍ତେ ପାରିବାରେ ମୁଖେୟ
ଦୂରେ ଥିଲା, ତିନି ପ୍ରିଣ୍ଟେର ବ୍ରାତନୀବ୍ରାତ ଦୂରେ ଓ ତାର (ଆମା ମନୀ)
ଶାହିବୀ ଦେବୀର ସକଳୀୟ ମନୁଷୀ, ବ୍ରାତନୀବ୍ରାତ ଦୂରେ ପ୍ରିଣ୍ଟେର କଳକାତାର ମନୁଷୀ
ଦେଖୁଣି —ଆହାଲାତେ ଏକ ଅଧିକାରୀ ଡାକିଲା, ମୁଖେୟରେ ଏଥିର ୧୭ ବ୍ୟାର
ବୁଦ୍ଧ ଦେଇ ମାତ୍ର ଥେବେ ତାକେ କଳକାତାଯେ ବନ୍ଦବନ୍ କଥାତେ ହତ, ଶିଥିର
ହୁବୁ —ମାତ୍ରାବାର ଗାର୍ଜେ ନ୍ରିଟ ହୋଇ ଆମୁଲେ ତିନି ଏକ ବୀରଙ୍ଗଳା କୌଣସିଲା
ନିମାର୍ଥ କରେଛିଲେବେ,

ଏ ମୁଖେୟର କାବ୍ୟ :— ବାଞ୍ଚୀ ମାର୍କିନ୍ ମାହକେଳ ମୁଖେୟ
ଦୂରେ ମଧ୍ୟକାବ୍ୟ ଦୂରେ ଦେଖନାହିଁ ବି
(୧୮୬୧), ମେଘନାହିଁ କାବ୍ୟ ଦ୍ଵାରା ମାହକେଳ ମୁଖେୟର ଦୂରେ ଆବତ
ଅନେକ କାବ୍ୟ ଲିଖିଦେଇ ଥିଲା — ତିଳୋଜାମା କାବ୍ୟ (୧୮୬୦), ବ୍ରାତକାଳ
କାବ୍ୟ (୧୮୬୧), ବୀରଙ୍ଗଳା କାବ୍ୟ (୧୮୬୨) ପଢିତି, ବୀରଙ୍ଗଳା କାବ୍ୟଟି ବ
ବାଞ୍ଚୀ ଶାଖାର ବ୍ୟାପି ପ୍ରୟୋଗ କରି, ମାହକେଳ ମୁଖେୟର
ବୀରଙ୍ଗଳା କାନ୍ତେର ମୋଟ ୧୯୩ ମର୍ଗ ରହିଥେ, ଏହି ଏକଟି ମର୍ଗ ମୋଟ ୧୯
ଦୂରେ ଦେଖନାହିଁ କାବ୍ୟ ଆହେ, ଏହି ଏକଟି ଗୁଣ କେତେ ତାର ଫ୍ରାମିର
କାହିଁ କେତେ ବିପରୀତର କାହିଁ ପରି ଲିଖିଥିଲା, ବାଞ୍ଚୀ ମାର୍କିନ୍ ଅନେକ
ଗଜ୍ଜ ଓ ଉପର୍ଯ୍ୟାମ ହଜାର କରେଥିଲେ ଏକଟି ପରକାବ୍ୟ ମଧ୍ୟରେ ଏହି ଏକଟି
ବୃକ୍ଷଟ ହଦିହେ,

ଏ ବୀରଙ୍ଗଳା କାବ୍ୟ :— ମୁଖେୟ ଏବି ବୀରଙ୍ଗଳା କାବ୍ୟ
ଅଳାକ୍ଷିତ ହୁଏ ୧୮-୨୨ ଲିଖିଥାଇଲା,
ଏହି ଏକ କାବ୍ୟ ରାଖି, କାବ୍ୟଟିଲେ ଏକଟି ପରି ରହିଥେ, ଏବୁଗୁ
ଏହି ମାହକେଳ ମୁଖେୟର ଦୂରେ ବୀରଙ୍ଗଳା କାବ୍ୟ ୧୯୩୩ ପୋରାନିକ
ନାହିଁ, ତାଙ୍କୁ ନାହିଁ ଅଥବା ପତିର
ଦେଖିଲେ ଲିଖିତ ପରିବା
ମର୍ଗକାଳର,

ଏହି ଏକ କାବ୍ୟ ଆମର ପରି କାହିଁ, ଜାତିରେ ହିନ୍ଦୁଜ୍ଞମାନ
ଅବଲମ୍ବନ କରି କାବ୍ୟ ରାଖି, କାବ୍ୟଟିଲେ ଏକଟି ପରି ରହିଥେ, ଏବୁଗୁ
ଏହି ମାହକେଳ ମୁଖେୟର ଦୂରେ ବୀରଙ୍ଗଳା କାବ୍ୟ ୧୯୩୩ ପୋରାନିକ
ନାହିଁ, ତାଙ୍କୁ ନାହିଁ ଅଥବା ପତିର
ଦେଖିଲେ ଲିଖିତ ପରିବା
ମର୍ଗକାଳର,

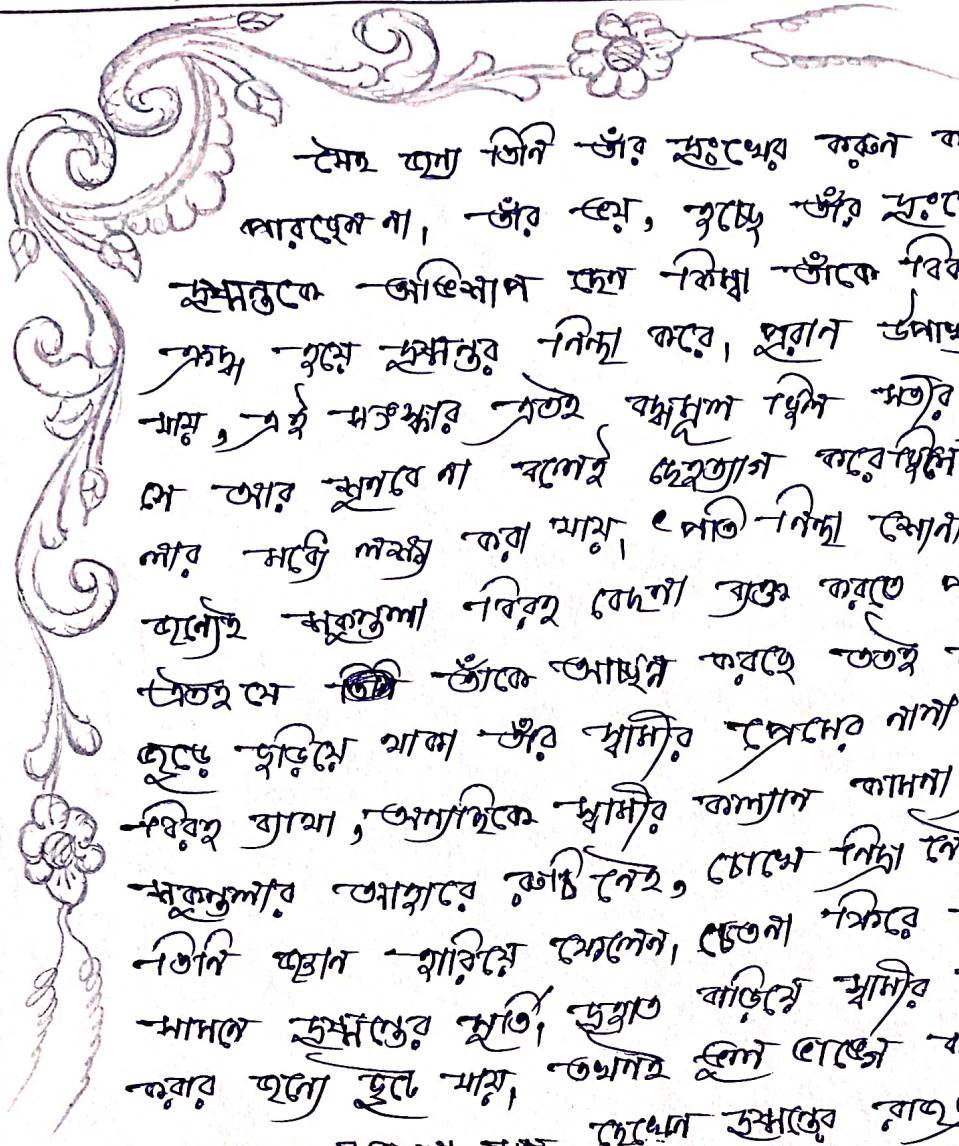
- १००
- ① -କୁମାରେ ପାତି ଭୁବନ୍ଦୀ,
 - ② -ଭୋଗେ ପାତି -ତୁଳା,
 - ③ -ଦ୍ଵାରକାନେ ପାତି ଜୟନ୍ତୀ,
 - ④ -ଦୂରପେ ପାତି କେଳୀ,
 - ⑤ -ଲକ୍ଷ୍ମନେ ପାତି ଶୁଦ୍ଧିଧୀ,
 - ⑥ -ଅହୁନେ ପାତି କୁଦ୍ରାପନୀ,
 - ⑦ -ଶ୍ରୀବିଦେବ ପାତି ଏହୁମାତୀ,
 - ⑧ -କୃତ୍ତବ୍ୟନେ ପାତି କୁତ୍ତବ୍ୟନୀ,
 - ⑨ -ମାତ୍ରମେ ପାତି ପ୍ରାଚୀବୀ,
 - ⑩ -ପୁରୁଷୀ ପାତି ଜୟନ୍ତୀ,
 - ⑪ -ନୀଳବିଦେବ ପାତି ତୁଳା,

୫୩ ବୀରଙ୍ଗଳା କାବ୍ୟେ ଲାଖି ଚାଲି ।

* ଅଭିମାନ ମର୍ଜା : - କୁମାରେ ପାତି ଭୁବନ୍ଦୀ ।

କୁମାରେ ବୀରଙ୍ଗଳା ଯାଏ ୧୧ଦ୍ୱାରା ପୋରାନୀକ କାବ୍ୟ ହାତେ ଲାଖି ଆମର
ପାତିର ଏହୁମା ଲାଖିତ ପାତିର ଭୁବନ୍ଦୀ, ବାଟଲା ମାତ୍ରିତ୍ରୀ ଏହ ପ୍ରାଚୀ ଶୁଦ୍ଧି ଏକାତି ମାତ୍ର
ଶୁଦ୍ଧି - ଶୁଦ୍ଧିହେ, -ଆମରା ଶୁଦ୍ଧିତ ପାତି ଯେ ସହ କାବ୍ୟେ ପୋରାନୀ ଓ -ଆମରା କାବ୍ୟେ
କହୁଛୋ -ଦ୍ୱାମକ କାବ୍ୟ ଉପିଦିତ ହି ବୀରହମେ ଥେବେ ଏହ ଅପାନୀ
ମତ୍ତାନୀ କହୁଛିଲେବ ବିଜିତ ପୁରୁଷ ମହାକାବୀ ଏବୁ ପାତି ଶୁଦ୍ଧି କାବ୍ୟରେ
କାହିଁ ଥେବେ, ବୀରଙ୍ଗଳା କାବ୍ୟେ ଅଭିମାନ ମର୍ଜା ପାଗଳର ଉପାନୀ
କାବ୍ୟ କହୁଛିଲେବ ମହାକାବୀ କାଲିଦ୍ବୀପେ -ଅଳ୍ପିଦ୍ବୀନ ଭୁବନ୍ଦୀ
-ଥେବେ, ଏହ ପାତି ବୀରଙ୍ଗଳା କାବ୍ୟେ ଅଭିମାନ ମର୍ଜା, କୁମାର ଭୁବନ୍ଦୀର
ପାତିର ମତେ ବିଜିତ କାବ୍ୟ ଲାଖି ଲାଖିବ ହେବେ, ଏହିଏହି କୁତ୍ତବ୍ୟନୀ
କାହିଁ କୁମାର ଭୁବନ୍ଦୀର କାହିଁ ଲାଖିବେ -ଆମେବି, ଏହ ଭୁବନ୍ଦୀ କୁମାରେ
ଲାଖିବେ ନା । -ଆମାମୁଖ ଭୁବନ୍ଦୀ ଆମେହାମେ ଏହ ବିବିଧ କାବ୍ୟ କାବ୍ୟ
କହୁନେ, ଭୁବନ୍ଦୀ ବିଧିରେ ମର ମୁଖ ମର ଅର୍ପିବାର ମୁଖ ହେଉଥିବି, ଭୁବନ୍ଦୀର
ମର୍ଜା ମାତ୍ରି ବୁଦ୍ଧି ମଞ୍ଚ କିନ୍ତୁମାନ ପିଲି, ଯନ୍ମଳେ ପାତିର କାଲିଦ୍ବୀ
କାମଲାର ହଂର ବୀରଲେବ ଏହ ବିତ୍ତ ପୁରୁଷ

५



—सेव तुम्हा जिनि ऊँचे दृश्येय कृत्ति तथा कायेव लादे प्रलक्ष कृष्णे
लारद्देव ना, ऊँचे ऊँचे ऊँचे दृश्येय कृत्ति बनहे-द्वे
हृष्मत्तके जिक्षाप इन निष्ठा ऊँके परिसा देख्ये ऊँचे पीय मध्येहुये
अन्धे गृहे हृष्मत्तके निष्ठा करे, प्रवान उपाध्याय रमेते चृष्मत्तके दोने देख्ये
गृहे, एक मठक्कारे प्रत्ये वाहुला रुपे अतीर मणे भार भूले प्रतिशिष्टा
दो अर तुलहे ना बडोर देवताग करेपूर्णे दोने मठक्कारे प्रधान भूत्तके
लाव मत्ते लक्ष्य करा याहु, एकत्रिनिष्ठा भोनी नाम ॥ एक दिक्का याकारे
जलेह कृष्मत्तका निष्ठा देवा बुझे कृष्णे पारद्देव ना, ऊँचे विष्टु ब्राह्मा
प्रत्युषे जिनि ऊँके आश्विन कृष्णे अत्तत्र निष्ठा देख्ये पारद्देव असम
हृष्मे द्वित्तिये वाले ऊँचे धामीरे देवमेव नामा निष्ठा एकद्वालेपटे
विष्टु ब्राह्मा, अग्राहिते धामीरे कृष्माय नामा एक देवालेपटे
सूक्ष्मत्तका आश्वावे तुल्यगेह, भोमे निष्ठा देह एक मालेमाले
हृष्मत्तका आश्वावे तुल्यगेह, भोमे निष्ठा देह एक मालेमाले
निष्ठा एकान शारिये भोलेन, भेलो निष्ठा देह एक मालेमाले
माले हृष्मत्तका धूति, धूति वात्तिये धामीरे चक्रमुगल भोले
कृष्णे उल्ले हुते धूति, भेलो लिंग लज्जे कामारे देवेजपटे,
कृष्णे उल्ले हुते धूति, भेलो लिंग लज्जे कामारे देवेजपटे,
माले माले सूक्ष्मत्तका धूति देवेज उत्तरे वालप्रामाण गृष्मत्तकेरे

माले माले सूक्ष्मत्तका धूति

॥ धूति - तुम्हे मुठीते देवी अद्वितीया.

दिक्का - तुम निष्ठित हृष्मावे हृष्मावे

दिक्का; सूर्यामाल देखि धूति धूति धूति

धूतिक्षमा; निष्ठावित्ती - गायत्री निष्ठावित्ती

लेन गाय, लेन गाय; भोगाम आगिन्दा

विविदि - हृष्मा लेन, लेन उपादेव

कृष्मा लेन, लेन! देखि हृति मानि याचि ब्राह्मि,

— उलाले - मानो उलो ॥

—କୁମାର ଦୁଃଖରେ ପାଶିଗାନ୍ତ କୁଳକୁଳାର୍—ଅକ୍ଷୁଣ୍ଣ ହୁମାତୁମ୍ଭୁ,
ମୁଦ୍ରିତ ଶବ୍ଦ ଏତେ ପାଇଁ ପର ଆମ ଲିଖି ହୁମାତୁମ୍ଭୁକେ ହୋଇଥିଲା
—ଏହି ପୁନ୍ଥା ଆମେ ଆହୁରେ ମୁଦ୍ରିତ ତିଥି ହୁମାତୁମ୍ଭୁ ହୋଇଥିଲା,

ହୁମାତୁମ୍ଭୁକେ ହୋଇଥିଲା—

॥—ତୋମାମୁଁ, ତୁମାମୁଁ, ହୋଇ କୁର୍ବା ଗିରିଧାରା !

—ତିଥିରେ ପାଇଁ କୁଳକୁଳାର୍ ଗୁଣଧର୍ତ୍ତ ଦ୍ୱାରା,
ମାତ୍ରିତ ଅକ୍ଷୁଣ୍ଣ—ବେଳେ ମମାଗୁଣ ଦେବି,
ଶୁଦ୍ଧତା କରେ, ଏତେ ବାଜାର-ଚାଲେ ॥

କୁମାର ଦୁଃଖରେ ଉଠାଯାଇ କୁଳକୁଳାର୍ ହୁମାତୁମ୍ଭୁ ଚିନ୍ତାରେ ପର ପରମା
ଗାନ୍ତ, ମୁଦ୍ରିତ ହୋଇଥିଲା ମହିମା କୁର୍ବା ଆହୁରେ କୁଳକୁଳାର୍ ମାତ୍ର
ଏ କେବିମେ କେବି କେବି କେବି—ଲାଗି ଲାଗି ଦୂରୀ ଦିଲିବ, ତିଥି
ଦେବିମାନ ଦୂରୀ ଦୂରୀ ସ୍ଵାତର ଦୂର ଦେବ କରେ କିମ୍ବା ଦୂର ଦୂର,
ଏହି ଅନ୍ତର ପ୍ରାଣରେ କେବିକି କାହିଁବା ମୋହରେ କଥା ବାବୁପାହେ ॥

—କୁଳକୁଳାର୍ କୁର୍ବା କେବି କଥା ମେଳା ଲେଇ, ତୋମାମୁଁ
ପୋଷିତାରେତ୍ତକା ଓ ନିରିନ୍ଦର ଦୂରୀର କେବି ଅନ୍ତର ଲେଇ କୁଳକୁଳାର୍
ଦୂର ଅନ୍ତର କେବି କେବି କେବି ଲେଇ, ତିଥି ଅନ୍ତରବାଦୀ ତାର ବିନ୍ଦମା
ଏ ମଧ୍ୟ କେବି କେବି କେବି କେବି କେବି କେବି କେବି କେବି —

॥—କୁର୍ବା ଅନ୍ତରର ଆମି ! କୁର୍ବା କୁର୍ବା

—କୁଳକୁଳା ଦେବରେ ମୋହରେ, ତା ଦୂର କିମାନେ ?

ଏ ନାହିଁ ପ୍ରାଣ ଏହେ କୁଳକୁଳା କିମାନି,
ପ୍ରାଣପାତି ?

—ମହାକବି କାଲିଦ୍ରାମେ ଅନିକିତାନ କୁଳକୁଳାର୍ ଅବଲମ୍ବନେ

—ମୁଦ୍ରିତ ଲାଟ୍—ଲକ୍ଷମାନାନ୍ତ ଏହି ପାଦିକାରି କୁଳା

—କରୁଥୁବେ, —କରୁଥୁବେ ମହାନିତିକେ ତିଥି କୁର୍ବା କୁର୍ବା କରୁଥୁବେ

—ତିଥି, ମାତ୍ର ଅନ୍ତର କୁଳକୁଳା କାହିଁବା

—ଅନିକିତାନ କିମି

—କାହିଁବା ଏ କୁଳକୁଳା କାହିଁବା କଥା ?

বৈংশঙ্গনা কান্তের পিয়াম-মার্ল মুকুলাই এবং চাকু ছিল বহুতে তা
অঙ্গস্থাসে পুরু হয়ে — তিনি নর, রাণী কে মুখে বহুত আস্থানন্দ,
তিনি অস্মিন্দোষ, কালো মাঝ গালপাণি মন্তকে তিনি দেবগণে, মুদীর ক্ষেত্র
কামনায় তাৰ জীবন্তে মুল বৃত্ত, তিনি ক্ষেত্রটী না, তিনি হিৎ-মাদ্রে অস্মুপালে
চীন কামাখীলা নাই, তিনি আস্মাবাদী। তাঁৰ প্রকাম অসম পুঁথি হৃষ্ণেন্দ্ৰজি কে
চিত্ত কুমু অবস্থায়ে তিনি তাঁৰ পাতিৰ কুণ্ড আৰু পুঁথি দৃশ্যেন,

(*) দ্বিতীয় মন্ত্ৰঃ—সোমেঃ পতি তাৰঃ— নবজ্ঞাগুরুনেৰ কৰি মাট্টেলো

মুকুলাই দৃষ্টি দৌৱালীক নাই পুনৰ কীভু নবজ্ঞাগুপমোগী দে কুশী
মুকুলাই মুকু কৰেছে তা বৈমক কৰি পাবলিমান পুলিমুস নামো বা
আলিহু আলিহু আলিহু প্রাণিত, কেলিহু নবিযোহুস পু মালোৰ পুধাৰ
দৌৱালীক নাই চাকুশুলিৰ নবশুল দাঢ়ান বহুতে আৰু চাকু
চুণেৰ কৈলেও সতি মারী বুমী থকে সুনু কৰে মৰ্বী—বৰ্বী
৬ অনুষ্ঠা নাই পুনৰুগ্নালি চাকুত বহুতে, মুকু ও পোষ্টা কেৱল
মস্তু নাইহো মনোৰূপ বিভেষ কৰে পনম্যমুকুক মাগীবৰতারু
প্রণাম দ্বারে বৈংশঙ্গনা কান্তে, এবং কান্তেৰ পাখিকাৰী পত্রেলো
নৰলা অমুৰ নিষ্ঠুৰু বজু কীভু দুৰ্দশ কৰাব মুকুতাৰিয়নী, মুকু
কুলিহু, তাঁৰ পত্রেলো মার্মাণী, প্রেমেৰ বীৰ্য তাঁৰ অস্মাকীণী,
কুশুল তাঁহো পত্রেলো মুতু মানুম কুপে মুকুতি কীভুহো,

এই বৈংশঙ্গনা কান্তেৰ দ্বিতীয় মন্ত্ৰ, এই পত্র দেবহুৰ
বৃক্ষাতিঃ শ্রী—হৃষ্টেও তাৰ পণ্য নিষ্ঠা কৰেছেন বৃক্ষাতিঃ
নিষ্ঠা সোমেঃ কান্তে, কুশু পত্রী ও কীভুৰ অবেদ্ধ প্রেম
কামী এবং পত্রে মুল বিষ্য, এ পত্রিকা থকে তাৰু
চৰ চাকুনাট কুশু তাৰ তাৰে মুকুলাই তাঁকে কীভুৰ
বৃদ্ধান্ত লাভয় কুপে
কুশুলাল কৃতে চাভেছেন,

■ ଦେଖୁଣ୍ଡ ବ୍ୟକ୍ତିର ପଶ୍ଚିମ — ହୀରା, ମୁଖୀସ କିମ୍ବା ଆମକେ ଯାଏନ୍ତି ଲିଖେଥିଲୋ
— ତାହେ ଏହି ଲେଖ ନିମାନାର କଥା ଲିଖିଛି ହେଉଥେ, କିମ୍ବା ହୁଏ ଦେଖୁଣ୍ଡ ବ୍ୟକ୍ତି
— କ୍ଷାଣୀ, ହୀରା, ମନ୍ଦର କ୍ଷାଣୀ ଭାବି, ମୁଣ୍ଡ ତାହୀର ଯୋଗତ ଉଚ୍ଚରେ ପାଇ
— ଏହି ରୂପରେ ତାହେ ଆରଧନ ଲିଖିଲା, ତାହୀର ଲାଗିଲା ଯୋକେ କୁଟ୍ଟ ବୁଝାନ୍ତି
— ମାତ୍ର ମାତ୍ର ତାହେ କିମ୍ବାର ଲେଖ ବାବୁତା ଏବଂ ଲେଖ ବାବୁରେ, ଏହି ଦେଖୁଣ୍ଡ କଥା
— ମାତ୍ର ମାତ୍ର ତାହେ କିମ୍ବାର ଲେଖ ବାବୁରେ, କିମ୍ବାରେ ପାଇ ମାତ୍ରଙ୍କୁ ଅନ୍ଧାରୁ କରେ
— କିମ୍ବାରେ ତାହେ କିମ୍ବାର ଭାବେ ତାହେ ଏହି କିମ୍ବା ବ୍ୟକ୍ତିର କାହେ
— ମାତ୍ରଙ୍କୁ, ଏହି ଅକଳୁକୁ ଯେତେ ଆମ ବା ଯାଏ ଏହି କିମ୍ବା ବ୍ୟକ୍ତିର କାହେ
— କିମ୍ବାରେ ପାଇଥାଏ କାହେ ଯାକେ, ଏହି ଅକଳୁକୁ ଏହେ ଦେଖିଲା
— ଏହି ପରମ ଦେଖିଲା ଆମର ପାଇ ତାହେ ଏହି ଆମର ପରମଙ୍ଗ ବାବୁ
— ଏହି ପରମ ଦେଖିଲା ଆମର ପାଇ ତାହେ ଏହି କିମ୍ବାରେ ଲିଖିଲା
— କାହେର ଏବଂ ଯୋକେ ଆମର ଏହି ଏହି ଏହି ଏହି ଏହି,
— ଏହି ଚିତ୍ର କରୁଥେ ଲାଗିଲାମ, ଏହି କିମ୍ବାରେ ତାହେ ଏହି ଏହି ଏହି,
— ଏହି ଚିତ୍ର କରୁଥେ ଲାଗିଲାମ, ଏହି କିମ୍ବାରେ ଭିମେ କୁଟ୍ଟିଲେ ପଣ୍ଡାରେଣେର
— ଏହି ଚିତ୍ର କରୁଥେ ଲାଗିଲାମ, ଏହି କିମ୍ବାରେ ଭିମେ କୁଟ୍ଟିଲେ ପଣ୍ଡାରେଣେର
— ଏହି ଚିତ୍ର କରୁଥେ ଲାଗିଲାମ, ଏହି କିମ୍ବାରେ ପରମ ଦେଖି ଥିଲେ
— ଏହି ଚିତ୍ର କରୁଥେ ଲାଗିଲାମ, ଏହି କିମ୍ବାରେ ପରମ ଦେଖି ଥିଲେ
— ଏହି ଚିତ୍ର କରୁଥେ ଲାଗିଲାମ, ଏହି କିମ୍ବାରେ ପରମ ଦେଖି ଥିଲେ
— ଏହି ଚିତ୍ର କରୁଥେ ଲାଗିଲାମ, ଏହି କିମ୍ବାରେ ପରମ ଦେଖି ଥିଲେ
— ଏହି ଚିତ୍ର କରୁଥେ ଲାଗିଲାମ, ଏହି କିମ୍ବାରେ ପରମ ଦେଖି ଥିଲେ

■ ଶୋଭାନିକ ମୁଗେ ଯେ ପ୍ରେମେ ଆମେର ବୁଝି ହାତେ ପାଇଁ
— ଏହି କୁଟ୍ଟି କଥି ଦେଇ ଆମେରକେ ଆବୁନିକ ମୁଗେପରମୋଳି କରେ ବୁଝି
— ଏହି କୁଟ୍ଟି କଥି ଦେଇ ଆମେରକେ ଆବୁନିକ ମୁଗେପରମୋଳି କରେ ବୁଝି
— ଏହି କୁଟ୍ଟି କଥି ଦେଇ ଆମେରକେ ଆମେର କଥା ଏହି ଲେଖ ପାଇଲା
— ଏହାକେ କୁଟ୍ଟି କଥି ଦେଇ ଆମେର କଥା ଏହି ଲେଖ ପାଇଲା
— ଏହି କୁଟ୍ଟି କଥି ଦେଇ ଆମେର କଥା ଏହି ଲେଖ ପାଇଲା
— ଏହି କୁଟ୍ଟି କଥି ଦେଇ ଆମେର କଥା ଏହି ଲେଖ ପାଇଲା
— ଏହି କୁଟ୍ଟି କଥି ଦେଇ ଆମେର କଥା ଏହି ଲେଖ ପାଇଲା
— ଏହି କୁଟ୍ଟି କଥି ଦେଇ ଆମେର କଥା ଏହି ଲେଖ ପାଇଲା

—कान्ही — विसर्ज करे नवि मनेर आसुष मधुता माटिर, बाकीमात्र, उगेन्द्राम
आसुष मधुता एव विगाके आक्षिकार करदेहें अंदूर उचाम, प्राचीनल
अंदूर लाते माटिर दृष्टि इयेहे गलेस नवि छिकि, लातूर मधी
—आवेदेह विवाहाता आवार मात्र निद्रागिनी,

॥ शुक्ल प्रमाद — अन्ने गदा धिला रुठ
— लातूर गम्भी; देवतात्रे अमात्मी — रुठ
— योगांठे रुठ यारे शुक्ल आदेह
मधुतूरे, तत ये रकि बाधिणाम आठ
सारे करि आव असि ॥

—नेत्री — “मणु कमा यरे कारि, शुक्ल चिरि;
— नेत्रीये शुक्ला सम्या पास्ति वानर
॥ विक्षी; शुक्लावाले शुक्ल चाहि द्विते
बाथ तोमार दुलु ॥”

—लातूर एव द्वेष उक्ते प्रथम उक्त्वा अमधेह मधुतारित रुठात
—प्रमेह वाया तिनि कात्तेह क्षात्रि द्वे री, शुक्ल निरा अक्षिन लेखे
एव मधुतूर उक्त्वा अमधुता कर्त्ता तातु अंते पद अंतू
—प्रनयामृष्णार वाया याहालेन, शुक्ल अभु प्रमेह आवेजे अठेत
प्रिलेन ए, प्रमादेह उक्त्वा उक्त्वा मज्जे तातु सुर्पनक लालक मधुतूरि
मधुतूर प्रिलेन तातु, तातु उक्त्वा प्रमादेह उक्त्वा निरेह, निरेह
लेखात्तेह विक्षीर द्वितेह तिनि, एकि लक्ष्मि! लेमले उक्त्वा, वे पोळ
लेखात्ति निधिलि उ पाप वाया? शुक्ल पद्मि ऊपे उक्त्वा प्रधान ऊक्ते
प्रधान उक्त्वा तातु अधान मात्रे रावतेह,

—मानी श्रुति आमि हीमि प्राप्ति

मान—हो—आमि नहि दृष्टि चूड़े,

जारि प्रेम आला कमरा—आके उद्देश पश्चिमाने गोले कहें
भाव माले जारा चूड़े भी रुचिके असूत छाने लाई बढ़े
निमायोगे पाहा प्रसूति रुले चूड़े प्रेमिक छाने ताके बाज ल
निरुद्धेन, बहुतः तारि प्रहृष्ट आगोले तार प्रमेयक प्रवास,
नहिं प्रेम भूमि कहू तोले, कमरा: प्रेम भूमि अभ्यु दृष्टि लाला,
माले माले ता अप्राप्ति अहु, प्रमेय चूमान प्रवास चहे अधा,
अधन तारा मासमु कमा, द्वारा, नभिन्नाति दृष्टि लाला लेहा—

कीरन मरन मम आदि तर शाते”, निरेश कर्म प्रसूति सुठान
इमें अगल तार निरेशे भूमति करि अलिङ्गा आवेदने दूसर
करि आव रोन अलाय निरि प्रेलन ला, अगले द्वितीय दृष्टि ले
प्रमाप्तदेह शाते अलग रहे दूसरी मार्गी रुलोग, इधाने तीर
गतिक दृष्टि ओ लालिक दृष्टि और दूसरे दृष्टि लेहा,

■ कमि श्रुतिमा मालिक लौति दिक थके आके तारके रविष्टि कहा
नि, मार्गतयादेह दिक देखे तिरि अख्य नवेहो तारक नारि कीरनेर एक
असतिरुद्धि द्वितीय प्रमेय आवेदने ओ प्रदायि अमादान, भाव माले अस्ति असि
जु असिकुलाहवा—इमें तारा अगामी लाग्यि सते आचरन रहे निरेशे
अलिनी बलेकिंठि कहेदेह, भे आवेदने भूमति करि भूमति तारक
दृष्टि, अहु तारा माला उंचू कहे निरि माला कमा आपारिक्केमार्ग दूले रविदेह
तीर्थ देह पारिकार, दूर कारणे तार एक प्रियोगिनी छानी,

* ईजिंस मर्जः द्वारकनाथेर प्रति रुक्मिणीः - माहोल मृश्नित द्वारे ओलंप्य

अत्र केषु अवतार श्रीकृष्णेर अविकाली, केषु वीर्यस्ति, केषु लक्ष्मीलो, केषु
प्रेमाद्भूता, केषु नव प्रेमाद्भूताद्य विष्णु, अत्रोक्त लक्ष्मीति तं च
प्रेमाद्भूत वा द्वारित वादे प्रवृत्त करेदेह नित्येर माणिक लक्ष्मीति
द्वारपाल अत्र, द्विर्विष्णुष्टि अभ्युक्त वायेर कृष्ण लक्ष्मी द्वौ एव विमान
प्रक प्रवृत्त करेदेहेन द्वारकापाति श्रीकृष्णके, मृत्युक ताले एके द्वार
प्राप्तमा करे,

स्मोरानिक द्वितीय अग्रधारी लक्ष्मीति द्वौ अवतार, मृत्यु
तीनि आत्मन द्वितीयाद्यना, देवस्व विष्णुष्टि अति अति मत्ते मने प्रतिष्ठे
वर्ण करेदेह द्वारकापाति श्रीकृष्णके, कोले एव निष्ठीश मृत्यु नवीन-लीला-र्व श्रुत
विष्णुष्टि द्वौ तीनि अति मत्ते अपान करेदेह, इत्यते अंत द्वारकाल उपस्थित
श्रुत्याव अंति आज लक्ष्मी द्वौ विष्णुपालेर अर्जु अंति विवाह नित्ये उद्योगी
इले अग्रागति वये नव त्रूति लक्ष्मीति द्वारकापातिके ताव अलानुक प्रेम विष्णु
प्रवृत्त करे, विष्णुपाले विष्णु त्रूति आवरु आहो पात्र द्वारकापाति
विष्णुपाल विष्णु त्रूति अमे अंके इत्यत करे नित्ये यां सेव आविलोक्य त्रूति विष्णु
मात्रा प्रत्यु त्रूति नित्ये त्रूति उद्योग लक्ष्मीति विष्णुप्रेम व गवयुक्तिय गान्धी
श्रीकृष्ण, तीनि द्वोक्तुष्टि द्वारकापाति श्रीकृष्णके अस्तीतिसे बुल कराव अग्ने जन
आव लग्नेर अद्यत तीनि श्रद्धमत्तमके अस्तु त्रूति पावेन ना, कोला, आते
विष्णुविली शते शते, एवम अकान्ता लक्ष्मीति द्वौ ता अवते पावेन ना, आह
विष्णुष्टि उद्योग आमोद्या द्वौ तीनि द्वारकापातिके भू लिखते विष्णु, विष्णु
विष्णुष्टि उद्योग आमोद्या द्वौ तीनि द्वारकापातिके भू लिखते विष्णु, विष्णु
लक्ष्मी लक्ष्मी अद्यत द्वोक्तुष्टि विष्णु त्रूति गान्धी मात्रो हो आविष्ट उद्योग,
त्रूति तीनि मात्रो कृष्ण त्रूति मात्रो विष्णु,

ମୁଖ୍ୟନୀରୁ ଏହା ମୂଳତଥ୍ବ ଶୁଣି ଏହା ସମାଜ ପାତ୍ରଙ୍କ ଏହା ଲୋକି ମହେ ଗିଲ୍ଲେଜ
କଥାକୁ ଚାହେ ଦ୍ୱାରାକାହିଁ କୁତି ମୁଖ୍ୟତଥ୍ବ, ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣଙ୍କ ଅଜ୍ଞା, -ଆବିରାଦେବ ଡକ୍ଟର୍
ଏବଂ ନାନୀ କିତିରେ ପ୍ରକଳ୍ପ କାହାଙ୍କି ଏହାରେ ନିଜି ଗିଲ୍ଲେଜେ ଓହି କଥାକୁ
ସମାଜ କଥାକୁ ଏହା କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ ନିଜି ପାଇବା ଏହା ପାଇବା ଏହାରେ ଆମରୀତା
ମେଲେ ଆମରୀତା ଏହା ଏହାରେ ଆମରୀତା, ମାତ୍ରିକି ଆମରୀତାମାତ୍ରିକି, ନିଜି ପାଇବା
ଓହି ହାତ ହୁଲ ଆମରୀତା କିମ୍ବା ନାହିଁ ଆହେ ନିଜିକେ ଉତ୍ସାହ କଥାକୁ ପାଇବା, ଆହେ
ଆତି ମର୍ଜନାଟେ ଦୁରକାଳାତିର କାହାରେ ଆମରୀତା ଏହାରେ

ମୁଖ୍ୟନୀରୁ ପ୍ରସମାଜର ପ୍ରତିଷ୍ଠା ପ୍ରକଳ୍ପ ଏହା ନିଜି ଗାନ୍ଧିରେ ଏହିଏ ମୁଁ କଥାକୁ ନା
ପେହେ ଆମରୀତିରେ ମନ୍ଦିର କଥାକୁ, ନିଜି କଥାକୁ ଏହା ପ୍ରସମାଜର ଏହାରେ
ମୁଖ୍ୟନୀରୁ କଥାକୁ ମନ୍ଦିର କଥାକୁ, କୁତି କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ ଏହାରେ ଆମରୀତା, ଆମରୀତା
ପରିଚିତ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ - ମନ୍ଦିର - ମନ୍ଦିର
କୁତି - କୁତି ପାଇବି କଥାକୁ, କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ - ନିଜି ପ୍ରକଳ୍ପ
ମାନିର୍ଦ୍ଦିତ ମାନିର୍ଦ୍ଦିତ ମାନିର୍ଦ୍ଦିତ ମାନିର୍ଦ୍ଦିତ ମାନିର୍ଦ୍ଦିତ ମାନିର୍ଦ୍ଦିତ ମାନିର୍ଦ୍ଦିତ
ମାନିର୍ଦ୍ଦିତ ଆମରୀତି କଥାକୁ, ଆମରୀତି କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ
କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ
କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ

ଏବଂ ମିଳିଛେ ଆମାର୍ଦ୍ଦ ପାଇବି ମହେ ମୁଖ୍ୟନୀରୁ ଏହା ପାଇବି ପାତ୍ରଙ୍କ ଏହା
ଆତେ ନିଜି ଆମରୀତି, ଆମରୀତିମାତ୍ରି, ଆମରୀତିମାତ୍ରି, ଆମରୀତିମାତ୍ରି - ଆମରୀତିମାତ୍ରି ଏହାରେ
କୁତିକାଳୀନୀ କୁତିକାଳୀନୀ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ
କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ
ନିଜି ପାଇବି କଥାକୁ, ଆମରୀତି କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ କଥାକୁ
ଆତିକେ ବ୍ରିଜିନୀ କଥାକୁ କଥାକୁ

* চতুর্থ সর্গঃ— নানায়ের প্রাতি দক্ষিণঃ— মাঝকেলা মুক্তিহন্ত দ্বারা পাঠিন

মাহিতুর উপাধা মুগ্ধ করে নতুন মুগ্ধের উপযোগী কাষণী নিমান করে
বাঁচা মাহিতু জ্ঞাতে নক্ষ পুরুষকালে অস্মরাপন করি মাহিতুকের আত বিটে আকৃত
পোকিত হয়ে গেছে, এই অধ্যাত্ম যেমন করি মুক্তিহন্ত নতুনের আদ্ধার আনন্দে
নহেন, ইমানি বটো বীভিত্তি ক্ষেত্রে বাঁচার নতুন শৈবরিধির পূর্বে করেন, ওঁর
বীরাঙ্গনা কাষু প্রিমাই এবং অক্ষুণ্ণ দ্বিতীয় মার মুক্তি ওঁর গুরু ক্ষেবনা নচিন্ত,
গুরু বিহু প্রচলন এবং আত্মামুক্তির মতুক্তার ও মুক্তার ও মুক্তোবিষ মানবিকতার
প্রতিবিধি ঘটেছে, বীরাঙ্গনা কাষু পশু-কাষু এবং মুক্তুক্ত বাঁচা মাহিতু একান
প্রযোগ্য, বাঁচার প্রযোগ্যাম শুল আমলের মাহিতুত গুরু পথে নিমুক্ত পদক্ষে
কার দ্বিতীয়গোষ্ঠী হন, খুব মাতৃব সূর সকার মাতৃ পুর দ্বারা বাঁচা শেষাম
রুচি হয়েছিল,

এই লক্ষ বীরাঙ্গনা কান্তের প্রাতুর্মুক্তি সর্গ, এই পথে কৈকীয়ি তার প্রাণ
মুক্তিযোগকে উদ্বেগ্ন করে এই পথ লেখেন, বাজা দুর্বল কৈকীয়ি কে পারিবারিত
নিমোনিত্বে তার প্রস্তুত কৃত অবে, এই মামায়ে দ্বারাপ ক্ষেত্রে নিমোনিত্বে
বাতুক্তিরে, নিমুক্ত বীম' মতে নিমী দ্বিষ্ট প্রশ্নকে বাজা করেন, এই প্রাতুর্মুক্তি
জেঙ্গুর অন্ত পুষ্টি হয়ে এই পথ লেখেন,

বীকীন প্রাণবান্ত স্বোরূপীক নাভিলাহ ওঁকের প্রেমান্ত আপ্য
স্বাস্তির উদ্বেগ্ন নিষিদ্ধ পথের মমবায়ে দ্বিতীয় বীরাঙ্গনা কাষু করেন নি, প্রযোজন
বুচা আনন্দকে পর্যন, বর্তন এবং মতুক্তার মার্বিন করে নিমোনে করি, বাঁচা নিমোনি
আনন্দ মুক্তুত দ্বলেত প্রাতু শৈবরীবাদু মুধ্যত অধ্যানে লক্ষ কৃত যান্ত, আবার
মহাকাশ মেঝে উপাধা মহান্তি হলেও তার ঘটাকে ইয়ে অনুসৃত না করে
প্রযোজন নক্তু পর্যন বর্তন এবং মতুক্তার মার্বিন করে নিমোনে করি, মুক্ত পুরুণ,
মুমান্ত ও পার্জিন মাহিতু মেঝে বীরাঙ্গনা কান্তের চারি ও কাষণীর উপাধা
চমুন কৃতুল্য বীরাঙ্গনা কাষু পথে একে কৃত মৌলিক দুষ্টু,

—কেকয়ীর —আচ্ছনে বিসেসালে শয় করে রহ্যাল ওঁকে নিতান্ত মুখ্যাদি
বলে মাত্র হয় না, তিনি প্রতি প্রতিতের নিংড়াল প্রাপ্তির জ্ঞ লাগাই করেছেন
বট, কিন্তু ওঁর পথে —তাৰ চেয়ে কৃ পুঁয়ে উত্তে রাণ্য দ্বন্দ্বপ্রে মণ্ডুরক্ষার
দ্বাৰা, বিমোৰ দ্বাৰা, রাধাকৃষ্ণন পাপি —মতু কৃষ্ণ ও বিমালার অবগুলো। তিনি
প্ৰিয়তমা —মাতৃত্ব শয়ে তা —মতু কৃষ্ণেন, কৃবাস? তাই মতুকৃষ্ণা ও বিমালার
জ্ঞ রাণ্যাকে তিনি নানানবে প্ৰাপ্তি কৰেছেন এক প্ৰমোদ্ধনে কঢ়াক্ষবাণো বিদ্যা
কৰেছেন,

—মামৌৰ প্ৰতি প্ৰথোক্ষতঃ কেকয়ী ওঁৰ সৌভুগ্রে দ্বন্দ্বে মোল দ্বাৰা
জেশে পড়াৰ ইঙ্গিত কৰে দ্বন্দ্বকে কামুক বলে —জীৱিত কৰে, বিদ্বেৰ ঘোচায়
ওঁকে বিমালে ও মতুপালে কৃ কৃতে চামেছেন, আগত কৰে —অচোতো
বা বিমুক্ষনকে মতু কৃতে চামেছেন, তোন না কেকয়ী গ্ৰাম বিটাৰ চাগ এবং
তিনি বলোছিল, রাণ্যাৰ বন্দুচ গ্ৰাম বিটাৰেৰ, সেই রাণ্যাই আৰু অন্তৰ্গত
শাকেন ত দুলে ওঁৰ উপনুক মহিমানী, প্ৰিয়তমা —মাতৃত্ব প্ৰকাশ কৰ্তৃ ইল
রাণ্যা বা মামৌকুল —গ্ৰামেৰ পথে চালিত কৃ, সেই আৰু কৃতে কেকয়ী কাঠন
বিটাৰকেৰ দুলিমিলা নিমেছেন,

—ত্ৰিতেৰ পাৰিবৃত্ত' দ্বেষ প্ৰ বান রাণ্যা দুলে কেকয়ী মুকুটি কাঠ,
হয়েছেন কৈকু নুকু বীৰজিলাগ কেকয়ী তাৰ চেয়ে চৰাসি কুণ্ডি দুয়ুড়ে
রাণ্যা —দ্বন্দ্বপ্রে —অবিমাচৰণ, তিনি তাৰ মামৌকু কাহে মদ্বালো সে আৰু মতু
নিবেহো কৃতে নিমে বলোছিল, মামৌ হৃত্তন না দুলে তিনি মুকু কৈকু কাঠে রাণ্যা

—অমতু—বাচী বৃষ্টু মুল—পৰতি!

নিলকু! প্ৰাপ্তিষ্ঠা তিনি কোঞ্জান মধুতে!

বিম—কু মুঁধে, গতি—অবিমোৰ পথে!

* ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ - ପ୍ରଥମ ପଦ୍ମନାଭ - ଏହି ପଦ୍ମ ଏକ ବାଲୁ - ବିବିରାବ ଦେଖ -
ନିବେଦନ କ୍ରତୁ ହେଉଥାଏ, ଯେଧାର୍ଥୀ କାହେଁ କାହିଁ ଦେଖି ତୁମ୍ଭଙ୍କିଳିଙ୍କରେ ବୁଝିଲୁ
ନିମ୍ନରେ - ବନ୍ଦା ବାବୁନ ନାହିଁ, ବୁଜିଲୁଣା କାହେଁ ତୁମ୍ଭଙ୍କିଳି କାହିଁ ଉଚ୍ଛବ ଲାଗିଲା ମୁମ୍ଭନାଥ
କେ କୌମନ୍ଦାମାତି - ଅନ୍ତର୍ମା ନାହିଁ ମଧ୍ୟରେ କଞ୍ଚନା କଟ୍ଟେନ ନାହିଁ, କାହିଁ ତୁମ୍ଭ ପଦ୍ମରେ ପ୍ରାଣରୂପ
ପୋତକ ଲାଗିଲା ଡକ୍ଟରେ ବାଲିମ୍ବାଦୁନ ତଥା ଏହି ପାତିଲାଘାରି ପାଢ଼ିବି ଯହିଲେ ବାନ୍ଦୁଲିଲ
ବାନ୍ଦୁ - ବିଲି - କୁମାର ମୁମ୍ଭନାଥରେ ଲାଗିଲିତେ ହରିବେ ଏବୁ ତାହାରେ ଏକହାନ ହୁଅଥି
ବିବିଧ ବୁନ୍ଦି ନିମ୍ନରେ କଞ୍ଚନା ଫରିତେ ହୁଅଥି, ବଳୀ ବାନ୍ଦୁଲୁ ଲାଗେବ ଅଭୁଗେଲେଇ କାହିଁ
ଏହି କଥା ବାଲିମ୍ବାଦୁନ ଏକ ପ୍ରେମାର୍ଥ ମୁମ୍ଭନାଥରେ ମୁଖ୍ୟମାନ କାହିଁ କାହିଁ ବାବୁରେ
ଏହି କାହିଁ କାହିଁମାହେନ, ମୁମ୍ଭନାଥ ଏହି ମୁହିସୁନ୍ଦର ଏକ ମୁଠଳ ଓ ଆପଣ ହୁଅଥି,

ଅନୁବଦୀ ବନ, ବୁନ୍ଦାନ୍ତ ଓ ସୀତାର ମଙ୍ଗେ ଦେଇ ବନେ ଥାକେନ ଲକ୍ଷ୍ମନ, ଲକ୍ଷ୍ମି
- ବୁନ୍ଦା ଦୋଷରେ ଅଳିନ୍ଦୁ ଦୋଷନ୍ଦୁ ବାଲୁ - ବିବିରାବ ମନ ହୁଏ କାହିଁମାହେ,
- ମୁମ୍ଭନାଥର ମନେ ହେଉଥାଏ ଲକ୍ଷ୍ମନ ପ୍ରକଳି ଏବୁ ଅବିବାହିତ, ଏ ଅବଶ୍ରାମ ତାହାର ପରେ
କାହାମେ ଲକ୍ଷ୍ମନର ପିତାମହ - ଦେବ - ନିବେଦନ ଆଦ୍ଵୀତ ଅମରତ ନମ୍ବି, ଦେ, ମୁହିସୁନ୍ଦର ହାତେ
ବାନ୍ଦୁମ୍ଭନାଥ ପୁରୁଷଙ୍କ ଏକ ଅନ୍ତର୍ମାର କାହିଁମାନ୍ଦୁ ମାନ୍ଦୁ ହେହାଏ, ବୁନ୍ଦୁମ - କଳା
ମୁହିସୁନ୍ଦର ତାହାର ହୃଦୟେ ଏ ଦେମ ଆକିନ୍ତ ପାଇଁ ଏବୁ ଏ ଦେମରେ ଅଭୁଗଙ୍ଗ -
ହୁଅଥି - ଅଳିନ୍ଦୁର ଆକିନ୍ତ ପାଇଁ, କାହିଁ ମୁମ୍ଭନାଥ - ପାତିଲାଭୁବନ ତାହାର ହୁଅଥି
ଚାକିମ୍ବାହେନ : - କେନ ହୁଅଥିର ନବ ଦୋଷରେ ମୁହିସୁନ୍ଦର
ବୁନ୍ଦୁ ଏବୁ ? ଅଳିନ୍ଦୁରେ ମୁଖ ତାହା ବିନ୍ଦୁ,
(ବୁନ୍ଦୁମାନା ଅଭିନିତ ନାମ) ମୋରି ତୋମାରେ !

ମୁମ୍ଭନାଥ ଏ ମାହାତମ ବିନ୍ଦୁନ ପୁର୍ବକ ବୁନ୍ଦୁମ୍ଭି ମାନ୍ଦୁତେ ପାଇଁ, କାହିଁ ଏଥାନେ
- ତାହାର ହୃଦୟ ହୁଅଥିଲା, ବୁନ୍ଦୁଲୁ ଧ୍ୟାନରେ ପାତୁଳିବୀ ବନେ ଅମନ କାହିଁମାହେ,

ତାହା ହେବିଲା ମୁମ୍ଭନାଥ ମୁହିସୁନ୍ଦର ଏବୁ ଆପଣ ତାହେ ନାହିଁ, ଦେଇ ମଙ୍ଗେ ତାହାର ହୁଅଥି
ହୁଅଥି କାହିଁମାନ ମାନ୍ଦୁତେ, ଲକ୍ଷ୍ମନ ବାବେ ହିତଳ ସମ୍ମନ କାହିଁମାନ ଥାଏନ, ଇହା
- ମନେ କାହିଁମାନ ମୁମ୍ଭନାଥ - ତାହାର ହୁଅଥିଲା, ତ୍ୟାଗ କାହିଁମାନ ବିନ୍ଦୁ ରତ୍ନ ମାନ କାହିଁ

—আই —তাঁহার —অসমৰ সমোক্ষ —য়ু, নেই —জিল্লা —কানুৱা জুন্দু কাবুলী
—দুইবে, —তাহাৰ —অনুগ্ৰহৈ —স্বৰ্গ চামুন্দুও বলে —অক্ষীৰ —ইন্দ্ৰৈ, —তাহাৰ
প্ৰেমিক—মাই কোণ মুক্তীৰ নৰমোৰত্ৰৈ মুৰি পান কৰিতে চায় —তবে মুল্পন্ধা
—তাহাৰ বাস বীৰণ কাৰুৰী কামনা ছুন্দু কাৰুৰৈ, মে মেৰা কাৰুৰী, পুত্ৰ—গীতে
মুগৰি কৰুৰী —তাঁহাকে মুৰৰ নীচিট গুৰে নালা —তবে আমল—বিদ্যুৎ
কৰুৰৈ,

কায়ু, মুং পান আমি মাঁলিৰ তোমাটো!

জুন্দু আমি বৃষ্টি—লেগ দুশীৰ আলয়ে,

—প্ৰেমৰ প্ৰেণায় মুপন্ধাৰ বালুকেৰ আগ কাৰুৰী ডুৰ্বলিবি বে প্ৰণ
কাবুলৈত সমুত্ত, মুগোমালায়ু পুৰুষৈ মে বীৰণ কাৰুৰৈ তুদ্রাক্ষৈৰ মালী,
—মে —তাহাৰ প্ৰেম হৃষ্টমন্ত্ৰ মানন্তে মোৰন বীৰ অমুল কাৰুৰৈ,

—লক্ষণেৰ প্ৰিতি মুপন্ধাৰ অশুণাগ মে আকুল, —তাহাৰ প্ৰমাণ,
লক্ষণেৰ জু মে মুল মুখ শুধু বুজো হৃষ্টলেত কুশিতা জু, প্ৰেমৰ
গুৰিৰত্ব—প্ৰি—অজনে সিদ্ধহস্ত কাৰি আই মুপন্ধাৰ প্ৰেমেৰ লোলমাছ প্ৰহলন
কৱেন জীৱ, জীৱ মজে —তাহাৰ অশুণাগেৰ অকল্পিতৈৰ কথ্যত বলিয়াছেন,
মুপন্ধাৰ প্ৰেমেৰ পজাহুতা হৃষ্টাকুবু জু কাৰি —তাহাৰ মুখ দিয়া. বে
প্ৰমাণ কথ্যত বলিয়াছেন জো, মুপন্ধা মে মণ্ডু আলয়ী, অৱৰ্যা চানী
লক্ষণেৰ বিকল্পী গ জু তবে জীৱ বে আমিয়া চুচুকে —তাহাৰে প্ৰকৰ
চৌকুলী মান, —আমিয়া মানী চুচুকে মে কুলীণী, তবে জীৱ হৃষ্টন্তে মুৰুৰী
মাটৰে মাঠৰে:

—কি জু মে বিবীতা

—চৌকুলী, —আমু আমি চৈধ, শুৰুমাণী!

—আজ্ঞা মলীয় মুপৰি; জনৈকী পানী

—চু কুমু, মিত্ৰে —তবে মাটৰে তথানী!

—রাস্তমুন্দা বুহুলেত মুপন্ধাৰ জুন্দু মে প্ৰত অশুণাগেৰ
অশুণায় ঝুমাদো, —তাহাৰ অক্ষীৰবীৰী মে আক্ষী জু কৰুতে
বুক্ষমী—প্ৰেমমী কাৰুৰী কাৰি বে গোমানিক হৃষ্টী শাহুটী
লিঙ্গাদেন —তাহা আমাদে হৃষ্টী কৰ্তৃ,

* অকাদম্য - অম মগঃ - নীলকিণ্ডের পতি ঘূলঃ

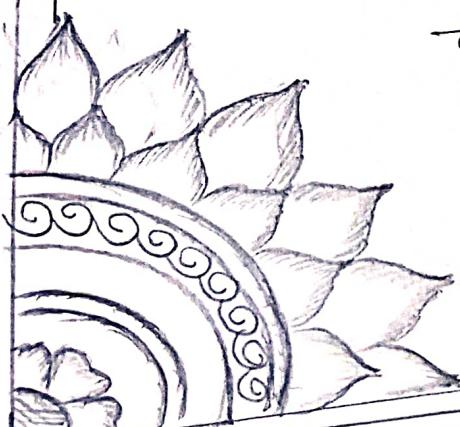
সাহেবেল বুদ্ধিমুক্তি দ্রুত বীরাঙ্গিলা কাশ্যের মধ্যে তাঁর কাব প্রকাশিয়ে মামাগিক
অভিজ্ঞান বিষিত কাশ্যের, অনিপাত্তির হৃষে বুঁতি এই কাশ্যের মধ্যে লোমলজ
ও বৈশিষ্ট্যের মাধ্যমে। ইয়েছে সুস নবন্দিবি মানবতাবাদের অঙ্গ গোহণ, অধ্যাত্ম গুরু
গবিন মূল - মানু চপান্তে, মানুবীতির চেয়ে কু দয়ে উচ্চে কিন্তু কুমিল
সোন্দর্য চাঞ্চল্য, নবী নান্দ এখানে কান্তি দ্রুতে বীরাঙ্গিলা কুপে, বীর আর্থ
কেবল রত্নালিনী মানু গু, বীরাঙ্গিলা তারে পরিণাম দেখালো ইয়েছে শুক্রি-
শুমানী নবী, অন্তর্মধ্যে নব আর্থ বীর বলতে একমাত্র জ্ঞানকে গু কু
চলে, অকাদম্যটি নবনুকীর মধ্যে অথার্ব ক্ষণিক বুদ্ধি তেন্তে সামান্য একমাত্র
জ্ঞানৰ মধ্যে দেখাতে পাওয়া মানু, কিন্তু তা স্বামীর পরিপুর্ণ, মণি নিষ্ঠ
সীর মতের কান্তি, চালে মানু রত্নালিনীর জ্ঞানে অথার্ব বীরাঙ্গিলা
বলা আয়,

বীরাঙ্গিলা কাশ্যের অজ্ঞানের অজ্ঞানাত্ম মধ্যে কুতু মান মতে
অনুমোগ সু পীঁয়েখিলেন, একতু হলো কেন্দ্রী, অসুরুর ঘূল, জ্যেষ্ঠুর
জ্ঞানোগ - সামুকুর বুদ্ধের মূল কাবল স্বামীর অন্যায় ব্রহ্মায়, মণি দ্রুত হৃব
আমুক কা মা ক্ষণিক বুদ্ধিমুপে তাঁদের আশ্রমানিব কাবল হৃষে দুর্ভিমুহু,
কুমুর - কোঁড়ের কাবল কেন্দ্রীকৃত দ্রুতে তাঁদের প্রয়ো পতি স্বামীর
জ্ঞানীন - আচৰন, তার মধ্যে কেন্দ্রীর দ্রুতে দুর্দ স্বার্থ কুকীর বাসনা
কিন্তু ঘূলাত প্রয়োক, মেধনাদুর্ব কাশ্যের প্রমীলার মতে তাৰ এক রূপালী
নামিক ঘূল মুকুলজের অন্যাতন স্থান, নবীছের কাছে স্বামীর দেশেও যে
মন্ত্রান - প্রমুত্তু - হৃকুচের বীর - তাৰ অমান পাওয়া মান ঘূল প্রাপ্তিয়,

এসা একদিন মাতা, শিশুরা মাতা, আমি স্মাকে তাৰ স্বীকৃতি-বিহুলী
 জ্ঞানোষ্ঠাপৰে . সবে স্বামীৰ পাতি অজিলালী সূৰ্য মুণ্ড উচ্ছেদ, জিনি স্বামীৰ
 কাহে বিহুয় পাথনা কৰেছো—মাটি চাষীবিহু ও পঞ্চ, বিহুয় নিয়ে দু
 তাৰ পুত্ৰৰ জ্ঞানোষ্ঠাপৰে মাতা কৃতে চাম, পিখানে দুনাৰ দোমল স্বীকৃতি
 স্বামীৰ পুত্ৰটো সূৰ্য, জ্ঞানে মুণ্ড উচ্ছেদ, সমগ্ৰ পাতিগাতিৰ মণ্ডি স্বীকৃত
 উচ্ছেদ, সামুদ্র, নদী স্বীকৃত দোমলতা, অপঙ্গ মৈৰ, পাতি পুত্ৰ ও দুমুড়ু
 কীৰ্তনেৰ কণ্ঠবানী প্রমতকাৰণোৱে সূৰ্য উচ্ছেদ,

প্ৰশংসনক দুনাৰ পক্ষে সহস্ৰীয় পুলি, কোলা দুনা স্বীকৃত বুলনী,
 সামুদ্র সময়ে প্ৰিমুণ্ডি বীৰগতি প্ৰাপ্ত হলো ঊঁঁচে মণ্ডি সুঁও দোকেৰ
 চেমেতে দোৱুৰ দেখি দোবি স্বীকৃত, নকুল দুনাৰ পক্ষে অমহীয় অকন্তা সুন
 ঊঁঁচে স্বামীৰ অকন্তা . আচুন, দুনাৰ আপমান্য আ আগত কঢ়ে,
 দে আগত দুনাকে আপমান্যেৰ নিকে শীগিমু নিমু গেছে, তাৰ
 এসা ঊঁঁচে স্বামীকে নিখেছেন —

“ কষ্টপূৰ্ণ বালা আমি; স্বীকৃত-কুল-বৰ্বী
 কেমনৈ এ অপমান সৰ বৈধি! বিৰি? ”
 “ হামিৰ এ দোষা পান প্ৰাপ্তবীৰ দুনে;
 দৈধিব বিস্মৃতি মাই কৃত্যন্ত লগাবৈ
 র্পণি — অচে! ”



॥ কৃতিত্ব পুরী ॥

- আমরা প্রতি পক্ষে মূলক কাছে সম্মত করতে পথে
- মেমৰ ক্রক্তি ক্রক্তি মহামৌসীতার প্রাত বাড়িয়ে দিয়েছেন
- তাহের দ্বারা পতি আমার স্বাদী ও কৃতিত্ব প্রাপ্ত,
কৃতিত্ব আলো পেরি পমন্তু অনুগারকে মেধানে প্রেকে প্রাপ্ত
বিদ্যুৎ পথ ও লাঙিলা আমার পক্ষে বনার কাছে মাধ্যম
করেছে, এবং মুগ্ধ মোচেন্দ্রগঠ মহাবিদ্যালয়ের বাচলা
বিশেষ অঙ্গিমক অঙ্গিমিকাদের - তাহের পরামর্শ, নিদেশনা
- ও পুরুষালয় - আমরা প্রতি অনুমতিগ্রহণক কাছে
- মুক্তি - দিয়েছে,

DG
Department of Bengali
S.J. Mahavidyalaya

EXAMINED

SB

20/2/2023
External
2/9/23